दादा भगवान परिवार का
जून २०२२
शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

# अक्रम एक्सप्रेस

## संपादकीय

मित्रों,

सुबह से लेकर रात तक हम कई लोगों के संपर्क में आतें हैं। जैसे कि हमारे फ्रेन्ड्स, फैमिली, टीचर्स, तरह-तरह की सर्विसेस देने वाले आदि। लेकिन क्या हमारे दिल में सभी के प्रति एक समान रिस्पेक्ट होता है? कई बार हम उन्हें मामूली समझते हैं या कई बार बातों में उन्हें नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। यदि कोई हमारे साथ ऐसा करे तो क्या हमें अच्छा लगेगा? नहीं! तो क्या हमें किसी के साथ ऐसा करना चाहिए?

किसी को मामूली समझकर कभी भी सच्ची सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। सफल व्यक्तिओं में एक ऐसा विशेष गुण होता है जो उन्हें सफलता के शिखर तक पहुँचा देता है।

तो चलो, इस अंक में उस विशेष गुण की समझ प्राप्त करें और साथ ही साथ सभी के प्रति आदर और रिस्पेक्ट बना रहे उसके लिए ज्ञानी की दृष्टि सेट करें।

- डिम्पल मेहता

# बिग ऑर स्मॉल, रिस्पेक्ट ऑल

वर्ष : १० अंक: ३

अखंड क्रमांक: १११

जून २०२२

.............................

संपर्कसूत्र

बालविज्ञान विभाग

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद - कलोल हाइवे,

मु.पो. - अडालज,

जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात

फोन : ९३२८६६११६६/७७

email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.



© 2021, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved


अक्रम एक्सप्रेस

एक 'छोटा' रहस्य
BUSINESS FAIR
ऐनिमल स्कूल में एक 'बिज़नेस फेर' आयोजित किया गया था। जिस टीम का सबसे ज्यादा प्रॉफिट होगा, उसे प्राइज़ मिलने वाला था।
सिमी और ज़ेबू स्टॉल पर...
ओहो ! पिज्जा बनाया है। मेरे लिए बिना ऑलिव्ज़ का पिज्जा बनाना।
अरे ज़ेबू, सभी ऑलिव्ज़ के लिए मना कर रहे हैं। ऑलिव्ज़ का खर्चा तो बेकार जाएगा।
थोड़े दिनों बाद सारे बच्चे प्राइज़ इवेन्ट के लिए इकट्ठे हुए,
मुझे पता है कि तुम सभी को बिज़नेस फेर से बहुत कुछ सीखने मिला। लेकिन विनर तो कोई एक टीम ही होगी न? तो इस बार के विनर्स हैं...हुफी और लेग्गी...
वॉट?? लेकिन, हमारे तो सब पिज्जा बिक गये थे।
सिमी, ऑलिव्ज़ के नुकसान के कारण हमारा प्रॉफिट कम हो गया था!

सर, हमारी सफलता का क्रेडिट भोलू को जाता है!
क्या वह सफाई वाले को?
एक दिन हम पार्क में बैठकर यह सोच रहे थे कि बिज़नेस फेर के लिए क्या बनाया जाए।
तभी हमने भोलू को सिमी और ज़ेबू के साथ बातें करते सुना...
हम पिज्ज़ा की टॉपिंग ऑलिव्ज़, चीज़ और दूसरी अलग-अलग चीज़ों से करेंगे। एकदम टेस्टी बनाएँगे।
बच्चों, पिछले साल पेरेन्ट्स ने पिज्ज़ा पर डाले हुए ऑलिव्ज़ फेंक दिए थे। मैने बहुत सारे ऑलिव्ज़ कचरे के डिब्बे में देखे थे।
इग्नोर हिम सिमी! ऐसे लोगों को टेस्ट, फ्लेवर और बिज़नेस के बारे में क्या पता!
ओके ओके....

हम लोग फ्रेंच लोफ सैन्डवीच बनाने वाले थे, जिसमें हम भी ऑलिव्ज़ डालने वाले थे।
भोलू की सलाह हमारे लिए वरदान साबित हुई। हमने सैन्डवीच में ऑलिव्ज़ कैन्सल किए और हमें उम्मीद से ज्यादा प्रॉफिट मिला।
बहुत अच्छा बच्चों! इस बात से मुझे क्रिकेट के उस्ताद सचिन तेन्दुलकर का एक किस्सा याद आ रहा है...
FOOD COURT
एक बार वे चेन्नई के एक होटल में थे। एक वेटर ने उनके साथ क्रिकेट के बारे में बात की।
वेटर ने उनसे कहा कि उनका आर्मगार्ड उनको बैटिंग करने में बाधा डालता है। सचिन ने यह बात पहले कभी नोटिस नहीं की थी।
सचिन ने वेटर की सलाह मानकर अपने आर्मगार्ड की डिजाइन बदल दी। नेक्स्ट गेम वे बिना किसी परेशानी के खेल सके।

FOOD COURT
MENU
सचिन को बहुत फायदा हुआ और उन्होंने उस का क्रेडिट वेटर को दिया। खरा इंसान वही कहलाता है जो सबकी बात आदरपूर्वक सुने और जो ठीक लगे उसे स्वीकार करे।
सभी जीव के अंदर भगवान बैठे हैं। तो हम किसी की बात को कम क्यों आँकें? यही है सफलता का एक 'छोटा' सा रहस्य।
भोलू, तेरी कैप तो बहुत बढ़िया है!
वापस लैटते समय सिमी और ज़ेबू को रास्ते में भोलू मिला,
भोलू ने कैप उठाकर दोनों को एक स्माइल दी।
जिसे हमेशा इग्नोर किया था उसके साथ दो मीठे शब्द बोलकर सिमी और ज़ेबू को प्राइज़ मिलने से भी अधिक संतोष हुआ!

# मीठी यादें

दादाश्री की भावना थी कि महात्माओं का एक ऐसा गाँव हो जहाँ रहकर सभी महात्मा एक साथ मिलकर आध्यात्मिक प्रगति करें। दादाश्री की इस भावना को नीरू माँ ने साकार किया।

अडालज में त्रिमंदिर बना और उसी परिसर में महात्माओं के रहने के लिए एक सुन्दर टाउनशीप का भी निर्माण किया।

क्या आप जानते हो, 'अडालज' की भूमी पर ऐसा भव्य निर्माण होने का संयोग किस तरह बना?

बहुत समय से इस निर्माण कार्य के लिए आप्तपुत्र भाई और महात्मा जमीन खोज रहे थे। लेकिन कोई पसंद नहीं आ रहा था। उसी दौरान गाँव की एक सीधी-सादी महिला ने नीरू माँ को 'अडालज' में जमीन ढूँढ़ने का सजेशन दिया। नीरू माँ ने उस बहन की बात मान ली। उन्होंने जाँच करवाई और इस बारे में विचार किया। और इस तरह, अडालज में हजारों महात्माओं के लिए त्रिमंदिर की विसिनिटी और पूज्यश्री के सानिध्य में एक परिवार की तरह रहने का एक सुन्दर स्थल बना।

मित्रों, नीरू माँ के लिए सभी महात्मा समान थे! कोई बड़ा नहीं, कोई छोटा नहीं। कोई विशेष नहीं और कोई नीचा नहीं। वे ओपन माइन्ड रखकर सभी सजेशन्स पर ध्यान देती थीं। हम सब भी नीरू माँ के पदचिन्हों पर चलकर, कोई भी ऊँच-नीच का भेद किए बिना एक-दूसरे के पूरक बनकर सेवा का काम करेंगे। करेंगे न?

पूरी दुनिया में किसी भी जीव को दुःख नहीं देना वह विनय कहलाता है।

# यह तो

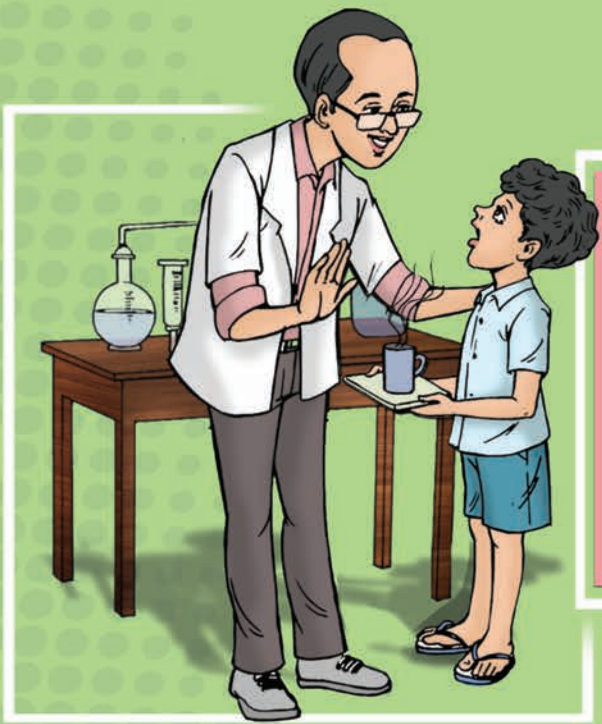

जो 'जितना महान' होता है उतना नम्र होता है, उसमें अकड़ नहीं होती। अकड़ तो छोटे लोगों में होती है।

उदाहरण के तौर पर: महान साइन्टिस्ट कभी भी अपनी योग्यता का रौब नहीं जमाते। वे हमेशा नम्रता से व्यवहार करते हैं। अपने से कम पढ़े-लिखे लोगों पर रौब जमाना, उसे अकड़ कहा जाता है।

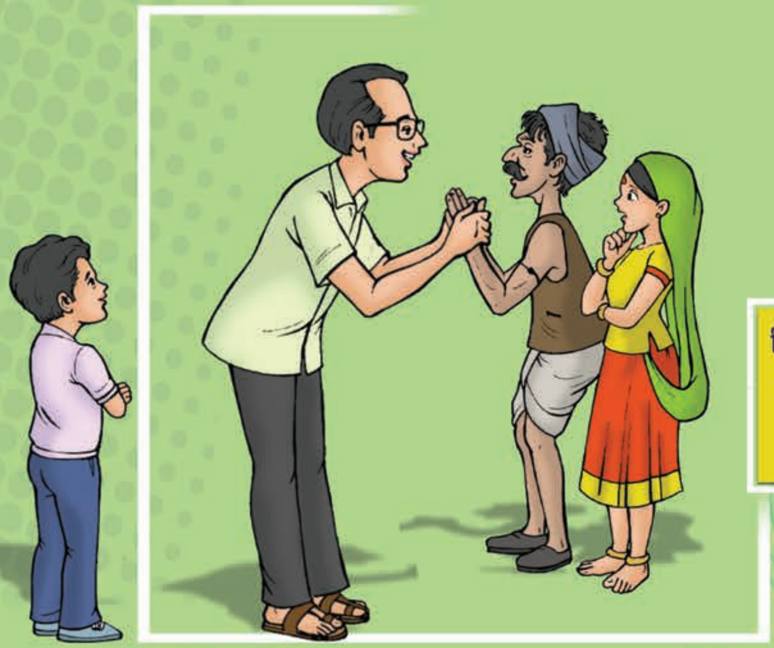

विनयी लोगों का व्यवहार देखना चाहिए, देखने से विनय उत्पन्न होता है।

# नई ही बात है!

कोई सरल हो, नम्र हो, लघुता रखता हो तो हमें ऐसा लगता है कि कितने अच्छे गुण हैं। उनके अच्छे गुणों को अप्रीशिएट करने से हमारे अन्दर भी वैसे ही गुण प्रकट हो जाते हैं।

# क्रूज़ की कमाई

"१०...९...८...७...६" स्तुति आँखें बंद करके तेज़ आवाज में बोल रही थी। बच्चों को क्रूज़ पर आए चार ही दिन हुए थे। लेकिन वे अच्छे मित्र बन गए थे। क्रूज़ के सभी खेल खेलने के बाद उन्होंने छुपन-छुपाई का खेल खेलना तय किया।

स्तुति की गिनती की आवाज़ से सभी अलग-अलग दिशाओं में दौड़ पड़े। व्योम भी इधर-उधर देखने लगा। उसने सोचा, "छिपने की जगह ऐसी होनी चाहिए कि कोई सोच भी नहीं सके!" कहाँ जाऊँ? कहाँ जाऊँ? सोचते-सोचते वह बेसमेन्ट की तरफ भागा।

स्तुति सबसे पहले कैफे एरिया की तरफ ढूँढ़ने निकली। "पकड़ लिया, निखील... स्टॉप... ओके, अब रुद्र, व्योम और मिली बाकी हैं... " कुछ ही देर में उसने रुद्र और मिली को भी ढूँढ लिया।

"यह व्योम कहाँ छुपा होगा?"

"उसने सबसे मुश्किल जगह ढूँढी होगी। मैं उसे जानता हूँ न!" निखील ने कहा। सभी व्योम को ढूँढ़ने लगे। लेकिन वह कहीं नहीं मिला।

अंत में सभी ने हार मान ली और सोचा कि शायद गेम छोड़कर व्योम किसी दूसरी मज़ेदार बात में डूब गया होगा। खाने का समय हो गया और सभी अपने पेरेन्ट्स के पास चले गए।

दूसरी तरफ व्योम ऐसी जगह छिप कर बैठा था जहाँ कोई उसे खोज़ न पाए। जब आधे घंटे के बाद भी कोई नहीं आया तो उसने पता लगाने का सोचा। उसने धीरे से दरवाजा खोलना चाहा। लेकिन यह क्या? दरवाजा खुला ही नहीं!! उसने ज़ोर से दरवाजे को धक्का मारा, लेकिन वह नहीं खुला। व्योम की हथेलियाँ लाल-लाल हो गईं, लेकिन दरवाजे का हैन्डल टस से मस न हुआ। वह मदद के लिए ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगा। लेकिन वह तो जहाज के बेसमेन्ट में जाकर छुप गया था। उसकी आवाज़ किसी के कानों तक कैसे पहुँचती? व्योम बहुत घबरा गया।

चिल्ला-चिल्लाकर उसका गला बैठ गया था।

जहाज पर व्योम की गैरहाज़िरी किसी ने नोटिस ही नहीं की। व्योम के मम्मी-पापा को लगा कि वह अपने फ्रेन्ड्स के साथ होगा और उसके फ्रेन्ड्स को लगा कि वह अपने पेरेन्ट्स के साथ होगा।

रो-रोकर व्योम की आँखें सूज गई थीं। कब नींद आ गई इसका उसे पता भी नहीं चला।

जब व्योम की नींद खुली तो सुबह हो गई थी और उसने अपने आप को जानी-पहचानी जगह पर सोता हुआ पाया। खिड़की में से दिखती समुद्र की लहरें और ब्राउन टेबल देखकर उसे समझ में आ गया कि वह क्रूज़ में अपने ही रूम में था! तो क्या जो हुआ वह सब एक सपना था? या जो दिख रहा है वह कोई सपना है? वह उठकर इधर-उधर देखने लगा। तभी उसकी मम्मी आई और उसे गले से लगा लिया, "व्योम, बेटा तुम्हें पता है हम सब कितने टेन्शन में आ गए थे?! फिर कभी भी ऐसी-वैसी जगह खेलने गए तो देख लेना!"

व्योम को याद आया कि बेसमेन्ट में रोते-रोते उसने जीने की आशा ही छोड़ दी थी। उसके लिए तो यह उसका दूसरा जन्म था। लेकिन उसे ढूँढ़ा किसने?

वह कुछ पूछता उससे पहले उसकी क्रूज़ फ्रेन्ड मिली उससे मिलने आ गई। वह थोड़े गुस्से में थी।

"हाय मिली... "

"तो मिस्टर ऐटिट्यूड! तुम्हारी रात कैसी बीती?"

व्योम दुविधा में था। क्या कहे उसे समझ में नहीं आ रहा था।

"तुम्हें पता है तुम्हें किसने बचाया?"

"किसने?"

"गोपाल चाचा..."

"गोपाल चाचा? वे कौन हैं?"

"भूल गए? फ्लोर की सफाई करने वाले। वे तुझे रोज़ खेलते हुए देखते थे। कल रात उन्होंने नोटिस किया कि तुम खेल कर वापस नहीं आए हो। सिर्फ उन्हीं को बेसमेन्ट के स्टोर रूम के बारे में पता था। जब वे सफ़ाई का सामान रखने गए तब उन्होंने तुम्हें वहाँ देखा। वे तुम्हें उठाकर रूम में छोड़ गए। आई एम श्योर कि पहले दिन उनके साथ हुई बातचीत तुम्हें याद होगी!" इतना कहकर मिली रूम से बाहर निकल गई।

उसे गोपाल चाचा के साथ हुई घटना याद आई। और वह अपने व्यवहार पर बहुत शर्मिंदा हुआ।

क्रूज़ पर पाँचों की फ्रेन्डशीप हुई थी। क्रूज़ का मज़ा लेने वे पाँचों जहाज़ के टॉप फ्लोर पर गए थे।

"चलो ट्रूथ और डेर खेलते हैं," व्योम ने सुझाव दिया।

"हाउ टु प्ले ?" स्तुति ने पूछा।

"वेरी सिम्पल ! मैं बॉटल घुमाऊँगा।

जिसकी तरफ बॉटल का मुँह जाकर रूकेगा उसका टर्न पहले आएगा। उससे पूछा जाएगा "ट्रूथ" या "डेर" । यदि वह "ट्रूथ" पसंद करेगा तो उसे किसी भी सवाल का सही-सही जवाब देना पड़ेगा। और यदि वह "डेर" पसंद करेगा तो उसे किसी भी तरह का चैलेन्ज स्वीकार करके उसे पूरा करना पड़ेगा। तो, तैयार हैं न सब?" व्योम ने बॉटल में से पानी का अंतिम घूँट पीकर बॉटल को बीच में रख दिया। सभी गोला बनाकर खेलने के लिए तैयार हो गए। निखील ने बॉटल घुमाई। बॉटल का मुँह रुद्र की तरफ जाकर रूका।

"चल होशियार, बोल, ट्रूथ या डेर चाहिए ?" व्योम ने पूछा।

"ओके, आई टेक 'डेर'... " रुद्र ने चैलेन्ज स्वीकार किया।

व्योम थोड़ी देर के लिए सोच में पड़ गया। तभी उसे एक आदमी दिखाई दिया। वह स्वीमिंग पूल के पास पोछा लगा रहा था। व्योम ने उस आदमी के कपड़ों की तरफ देखा और तुरंत ही रुद्र को कहा, "जाओ, उस आदमी से पूछकर आओ कि वह कितने दिनों से नहाया नहीं है... " यह चैलेन्ज सुनकर सबको हँसी आ गई।

"ओह, इसमें कौन सी बड़ी बात है..." रुद्र बोला।

"हाउ सैड... तुम लोगों को शर्म नहीं आती?" कहते हुए मिली खड़ी हो गई।

"ओ, कम ऑन मिली, हम तो सिर्फ मज़ाक कर रहे हैं..." व्योम ने मिली को बैठने का इशारा किया।

रुद्र ने उस आदमी के पास जाकर प्रश्न पूछ ही लिया। एक तरफ ऐसा प्रश्न सुनकर वह आदमी उदास हो गया तो दूसरी तरफ मिली के अलावा सभी रुद्र की डेरिंग देखकर जोर से हँस पड़े।

तभी जहाज के कैप्टन मिस्टर साजित वहाँ आए। उनको देखकर तुरंत ही सभी खड़े हो गए।

"हेलो फ्रेन्ड्स! क्रूज़ पर मजा आ रहा है न...?"

"हाँ, सर..."

"कोई तकलीफ तो नहीं है न?"

"नहीं सर... "

"गुड, गुड" कहकर वे वहाँ से चले गए।

यह देखकर मिली ने व्यंग में ताली बजाते हुए कहा,

"वाह..वाह..वाह...कैप्टन को देखकर तुम सब खड़े हो गए और क्लीनर का मज़ाक उड़ाते हो? तुम्हें क्या लगता है, क्या क्रूज़ सिर्फ कैप्टन से ही चलता है?"

"तो और क्या? आइ मीन, कम ऑन यार! क्लीनर्स कौन सा बड़ा तीर मारते हैं?! सिर्फ सफाई ही तो करते हैं न... " व्योम ने कंधे उचकते हुए कहा।

मिली सिर हिलाते हुए वहाँ से चली गई।

क्रूज़ के साइरन की आवाज़ सुनकर व्योम वर्तमान में लौट आया। सफाई करने वाला वही आदमी जो व्योम के हिसाब से 'यूज़लेस' था, उसने आज व्योम की जान बचाई थी। शायद इस उपकार का बदला व्योम कभी नहीं चुका पाएगा। उसे अपने व्यवहार पर बहुत पछतावा हुआ।

थोड़ी देर चक्कर लगाने का सोचकर व्योम अपने रूम से बाहर आया। एक कोने में खड़े होकर वह क्रूज़ का निरीक्षण करने लगा।

एक तरफ वेटर सभी को खाना परोस रहा था। दूसरी ओर दो-तीन लोग सफाई कर रहे थे। सभी गेस्ट मज़ा ले रहे थे।

क्या हो अगर समय पर सफाई नहीं की जाए...

क्या हो अगर शेफ समय पर खाना न बनाए...

यदि वेटर हमें परोसने के लिए खड़ा न रहे तो...

क्रूज़ की जर्नी इसलिए अच्छी चल रही है क्योंकि सभी अपना-अपना काम अच्छी तरह से कर रहे हैं। सभी लोग कोई न कोई रोल निभा रहे हैं और सभी काम महत्त्वपूर्ण हैं। और इसलिए सभी रिस्पेक्ट और आदर के हकदार हैं।

ऐसा सोचकर व्योम को बहुत हल्का महसूस हुआ। उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह कभी भी किसी को अपने से नीचा नहीं मानेगा। हमेशा दूसरों के पॉज़िटिव पॉइन्ट्स देखकर अपने अंहकार को डाउन रखेगा। तभी उसके फ्रेन्डस निखील, स्तुति, रुद्र और मिली वहाँ आ पहुँचे।

"आर यू ओके व्योम?"

"यस, थैंक्स टु गोपाल चाचा। आइ हेव नेवर बिन बेटर! इतना अच्छा तो मैंने पहले कभी फील नहीं किया है।" व्योम की आवाज़ में सही समझ की विनम्रता थी।

# खुद को परखकर देखो!

नीचे दी गई प्रत्येक परिस्थिति में क्रिश और रिश का अप्रोच अलग-अलग है। आप किसके जैसा अप्रोच रखना पसंद करोगे ?

फ्लोर गीला है क्योंकि अभी पोछा लगाया है।

क्रिश और रिश ने पैकेट में से निकालकर चिप्स खाई।

रिश ने खाली पैकेट रास्ते में फेंक दिया।

सफाई करने वाले को ज्यादा मेहनत न करनी पड़े इसलिए क्रिश ने डस्टबिन ढूँढ़कर उसमें खाली पैकेट डाला।

टाउनशीप से बाहर निकलते समय क्रिश हमेशा गेट पर सिक्युरिटी गार्ड को 'जय सच्चिदानंद' कहकर निकलता है।

रिश अपने काम से काम रखता है। उसे तो ख्याल भी नहीं रहता कि गेट पर सेक्युरिटी गार्ड थे कि नहीं।

# ज्ञानी कहते हैं...

**प्रश्नकर्ता :** मेरे मन में सभी के लिए एक समान रिस्पेक्ट (विनय) नहीं है। टीचर और डॉक्टर को ज्यादा रिस्पेक्ट देता हूँ और वॉचमैन चाचा को उतना रिस्पेक्ट नहीं दे पाता हूँ। तो ऐसा क्यों है?

**पूज्यश्री :** आपको ऐसा लगता है कि ये वॉचमैन है, उसे वेतन देते हैं। मेरी तबीयत बिगड़ने पर डॉक्टर काम आते हैं, टीचर मुझे पढ़ाते हैं। इसलिए ऐसा होता है। लेकिन किसी के नेगेटिव नहीं देखने हैं, इतना तो हो सकता है न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**पूज्यश्री :** यदि वॉचमैन मामूली व्यक्ति लगे तो कहना कि 'बेचारे रात भर सेवा करते हैं, बारह घंटे दरवाजे पर खड़े रहते हैं। चोरी नहीं करते, झूठ नहीं बोलते, गलत इंसान को बिल्डिंग में घुसने नहीं देते। अच्छे इंसान हैं। सिन्सियरली काम करते हैं।' इस तरह सभी के पॉज़िटिव देखने चाहिए। पॉज़िटिव देखने से रिस्पेक्ट देने के इक्विवेलन्ट (बराबर) हो जाएगा कि किसी को मामूली नहीं समझा। आप किसी को नीचा नहीं समझते हो, लेकिन थोड़ा ऐसा लगता है कि ये टीचर हैं, ये डॉक्टर हैं, दीपकभाई आए तो उन्हें थोड़ा बड़ा मानते हो। इसका फर्क पड़ जाता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि किसी को मामूली समझो, सभी के पॉज़िटिव देखने चाहिए।

ऐसा लगता है कि ये बॉस हैं और ये अन्डरहैन्ड (बॉस के अन्डर काम करने वाला) है। लेकिन हमेशा पॉज़िटिव ही देखना चाहिए। अन्डरहैन्ड के आधार पर ही तो वह बॉस कहलाता है न? तो बॉस की कीमत ज्यादा या अन्डरहैन्ड की!

**प्रश्नकर्ता :** अन्डरहैन्ड की।

**पूज्यश्री :** अगर अन्डरहैन्ड न हो तो बॉस को बॉस कौन कहेगा? इस तरह से समझ सेट करनी चाहिए। मैं तो ३ साल का बच्चा हो न, उसे भी अपने से बड़ा मानता हूँ, कि ये ८० साल के (जो गुजर गए थे वे) वापस आए हैं, वही ये ८३ साल के चाचा हैं। जय सच्चिदानंद मुन्ना। तो फिर हमसे बड़ा कहलाएगा कि नहीं?

AALOO CHILLY
Today's Special:
आलु का बर्थ डे है!
इस पिगी को यहाँ किसने बुलाया? मुझे इसके पास खड़ा नहीं रहना। कितनी बदबू आ रही है!
चिली, क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?
नहीं, थैंक्स।
पिगी, वहाँ क्या कर रहे हो? चलो, साथ में खाना खाते हैं।
आलु, उसे क्यों बुला रहे हो?
अरे, पिगी अकेला खड़ा था। मुझे अच्छा नहीं लगा इसलिए उसे अपने पास बुला लिया!

# चलो, खेलें...

पीक्चर के नाम अंग्रेजी में लिखें

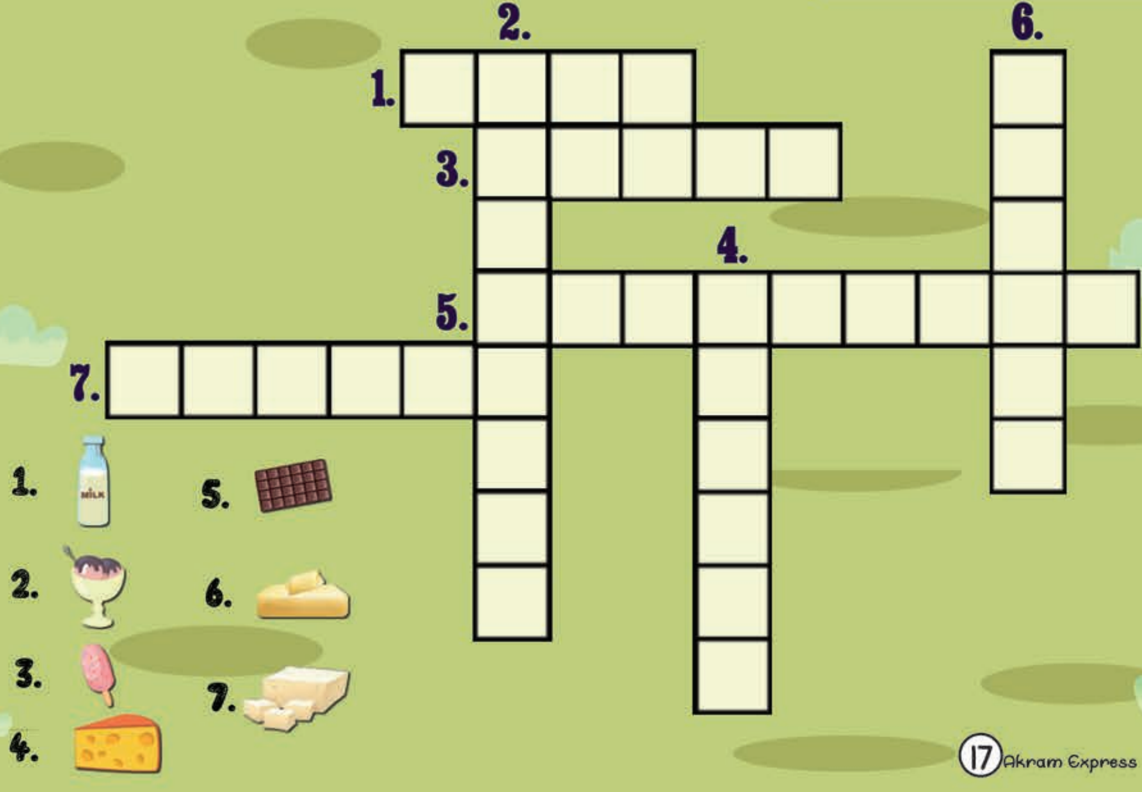

# जीवंत उदाहरण - १
## असली सम्राट

नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांस के महान सम्राट थे। एक दिन वे अपनी पत्नी के साथ नगर में घूमने के लिए निकले। वे एक छोटी सी गली से गुजर रहे थे। उन्होंने देखा कि सामने से एक मजदूर सिर पर बड़ा गट्ठा लेकर आ रहा है। जैसे ही वह मजदूर नेपोलियन के नज़दिक पहुँचा, वे एक तरफ हट गए और मज़दूर को जाने के लिए रास्ता दे दिया।

नेपोलियन की पत्नी को मजदूर पर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने नेपोलियन से कहा, "आपको उस मजदूर को सजा देनी चाहिए। उसे इतना भी पता नहीं कि राजा का आदर करना चाहिए और राजा को प्रणाम करके रास्ता देना चाहिए!"

नेपोलियन ने अपनी पत्नी को समझाते हुए कहा, "आपने देखा नहीं कि उस मजदूर के सिर पर कितना वजन था? वह मेहनत करता है। और मुझे उसकी मेहनत के प्रति आदर है। मेरा मानना है कि श्रम का आदर राजा के आदर से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। इसलिए मैंने श्रम का आदर करते हुए उनको सामने से रास्ता दिया।!"

तो मित्रों, यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि जो लोग महान हुए हैं वे अपने गुणों के कारण महान बने हैं, अपनी पदवी के कारण नहीं। आज के बाद हम भी सभी का आदर करेंगे न!

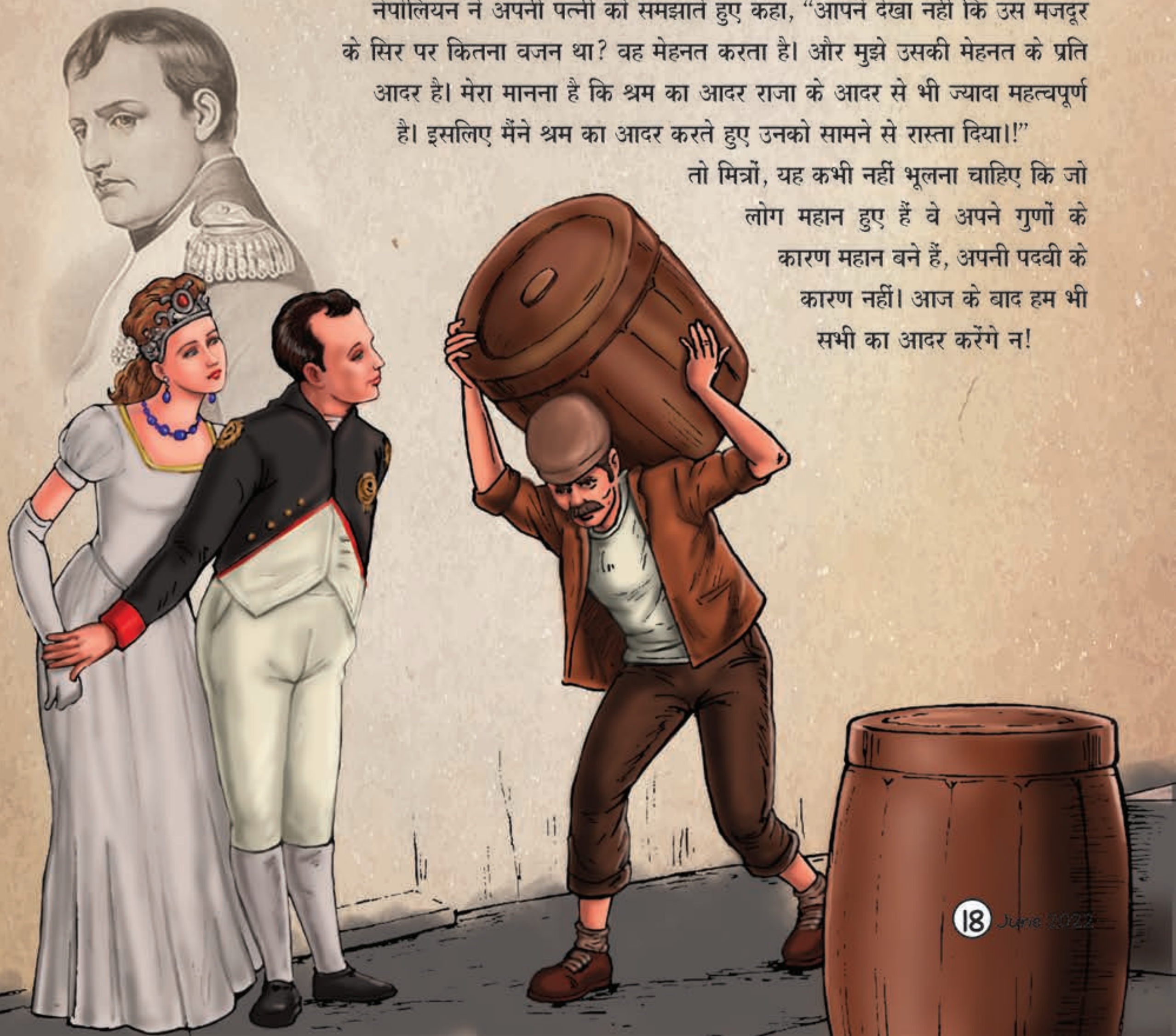

# जीवंत उदाहरण - २

## कलाम को दिल से सलाम

एक इवेन्ट में भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम मेहमान के रूप में आमंत्रित थे। डॉ. कलाम के लिए एक कुर्सी रिजर्व की गई थी। लेकिन उन्होंने उस पर बैठने से इंकार कर दिया। जानते हैं क्यों? क्योंकि वह कुर्सी अन्य सभी मेहमानों की कुर्सियों से ज्यादा स्पेशल और बड़ी थी।

कितना उच्च भाव! 'मैं किसी से बड़ा हूँ' ऐसा भाव न तो कभी उनके मन में था और न ही कभी उन्होंने इसका दिखावा किया था!

जानते हो, राष्ट्रपति बनने के बाद जब पहली बार डॉ. कलाम अपने राज्य में गए थे तो उन्होंने किन प्रतिष्ठित मेहमानों को राजभवन में आमंत्रित किया था? एक मोची और एक छोटे से होटल के कर्मचारी को।

'कोई मुझसे कम पढ़ा लिखा है या कम स्टेटस वाला है' ऐसी भावना डॉ. कलाम के हृदय में कभी नहीं थी। उनमें इतनी गज़ब की नम्रता थी की वे किसी भी व्यक्ति के साथ सरलता से मित्रता कर लेते थे!

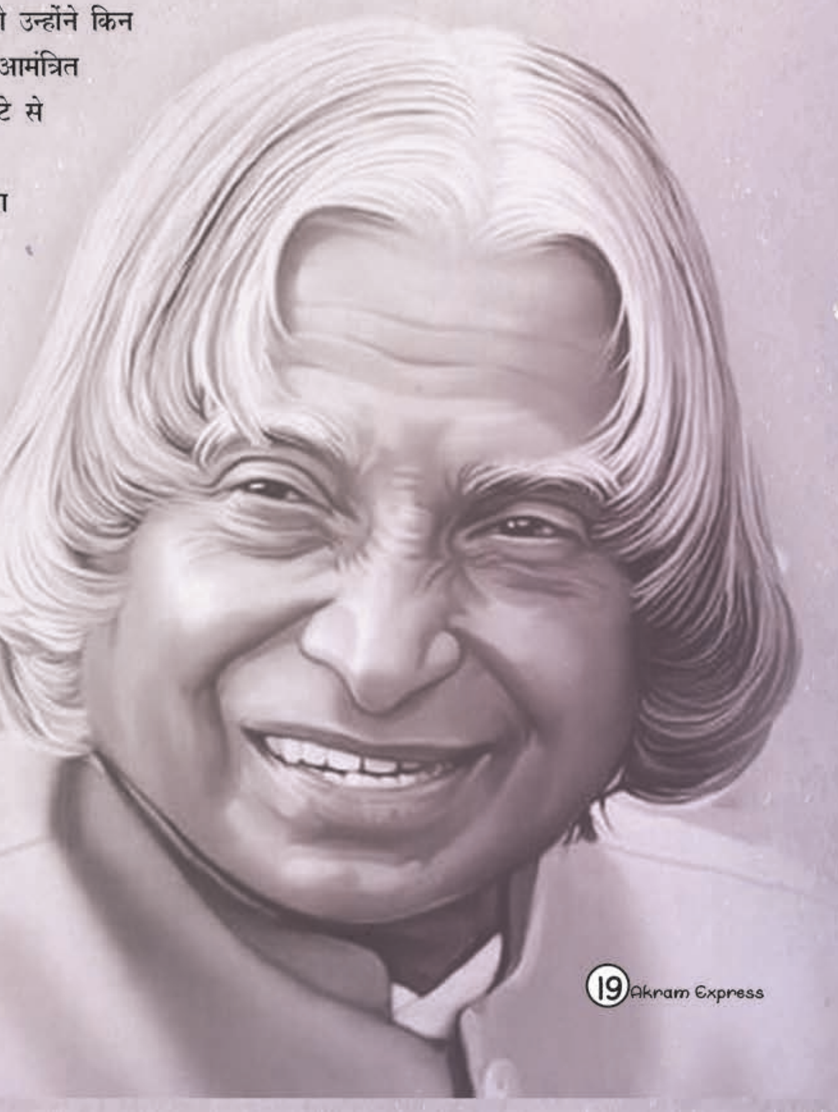

Akram Express

June 2022
Year : 10, Issue : 3
Conti. Issue No.: 111

BALVIGNAN

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

## 9th May Pujyashree's B'day celebration

**BMHT, YMHT**
**समरकैम्प की झलक के लिए**
**QR code Scan करें।**

**चलों खेलें के जवाब**

1. MILK
2. ICECREAM
3. CANDY
4. CHEESE
5. CHOCOLATE
6. BUTTER
7. PANEER

**अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना**

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

*Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation*
*Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025*